



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत में सार्वजनिक
स्वास्थ्य शिक्षा की चुनौतियाँ

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा की चुनौतियाँ

संदर्भ

- कुशल सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों की माँग को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें प्रशिक्षण में मानकीकरण की कमी से लेकर स्नातकों के लिए सीमित रोजगार के अवसर तक शामिल हैं।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा के बारे में

- विकास:** औपनिवेशिक युग से प्रारंभ हुआ जब मुख्य रूप से महामारी नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित किया जाता था।
 - 1932:** अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (AIIHPH) जैसी संस्थाओं की स्थापना, व्यवस्थित सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण की ओर बदलाव।
 - स्वतंत्रता के बाद का युग:** राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान (NIHFW) और विभिन्न चिकित्सा विश्वविद्यालयों जैसे संस्थानों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य को एक विशेष क्षेत्र के रूप में शामिल करने के लिए अपने पाठ्यक्रम का विस्तार किया।
- वर्तमान रूपरेखा:**
 - स्नातक कार्यक्रम:**
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य स्नातक (BPH):** एक आधारभूत पाठ्यक्रम जो महामारी विज्ञान, स्वास्थ्य नीतियों और सामुदायिक स्वास्थ्य पर ज्ञान प्रदान करता है।
 - सामुदायिक चिकित्सा विशेषज्ञता के साथ MBBS:** चिकित्सा पाठ्यक्रम का एक घटक जो छात्रों को सार्वजनिक स्वास्थ्य अवधारणाओं से परिचित कराता है।
 - स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रम:**
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर (MPH):** AIIMS, TISS और IIPH जैसे संस्थानों में उपलब्ध एक विशेष कार्यक्रम, जिसमें महामारी विज्ञान, स्वास्थ्य प्रणाली और नीति-निर्माण शामिल है।
 - सामुदायिक चिकित्सा में MD :** अनुसंधान, निवारक चिकित्सा और स्वास्थ्य प्रशासन पर ध्यान केंद्रित करता है।
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य में Ph.D.:** भारत में स्वास्थ्य सेवा चुनौतियों पर गहन शोध को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालयों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
 - अल्पकालिक और ऑनलाइन पाठ्यक्रम:** कार्यरत पेशेवरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, भारतीय लोक स्वास्थ्य संस्थान (IIPH) और IGNOU सहित विभिन्न संगठन स्वास्थ्य प्रबंधन, महामारी विज्ञान और पोषण में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।
- पिछले दशक में भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों में 60% की वृद्धि हुई है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाली प्रमुख संस्थाएँ

- अखिल भारतीय स्वच्छता एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (AIIHPH), कोलकाता
- भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य फाउंडेशन (PHFI) और भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (IIPH)
- टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS), मुंबई

- AIIMS (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान), नई दिल्ली
- राष्ट्रीय महामारी विज्ञान संस्थान (NIE), चेन्नई

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ

- जागरूकता और मान्यता का अभाव:** सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रायः नैदानिक चिकित्सा से प्रभावित होता है, जिसके कारण MPH कार्यक्रमों में नामांकन कम होता है।
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य में कैरियर के अवसरों के बारे में सीमित जागरूकता छात्रों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने से हतोत्साहित करती है।
- संकाय और बुनियादी ढाँचे की कमी:** कई संस्थान सार्वजनिक स्वास्थ्य में प्रशिक्षित अपर्याप्त संकाय का सामना कर रहे हैं।
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्रों में बुनियादी ढाँचा, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अविकसित बना हुआ है।
- पाठ्यक्रम और व्यावहारिक प्रशिक्षण में अंतराल:** पाठ्यक्रम में प्रायः वास्तविक विश्व की चुनौतियों के साथ एकीकरण की कमी होती है, जिसके परिणामस्वरूप स्नातकों को सैद्धांतिक ज्ञान तो होता है, लेकिन व्यावहारिक अनुभव सीमित होता है।
 - सीमित फील्डवर्क और इंटर्नशिप के अवसर व्यावहारिक शिक्षा को प्रभावित करते हैं।
- क्षेत्रीय असमानताएँ:** अधिकांश प्रसिद्ध सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान शहरी क्षेत्रों में केंद्रित हैं, जिससे ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्र वंचित रह जाते हैं।
 - वंचित समुदायों के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच और सामर्थ्य चिंता का विषय बना हुआ है।
- मानकीकरण का अभाव:** भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा में मानकीकृत पाठ्यक्रम का अभाव है, जिसके कारण संस्थानों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता में असंगतियाँ हैं।
 - यह वास्तविक विश्व की स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करने के लिए स्नातकों की तैयारी को प्रभावित करता है।
- स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी:** राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र (NHSRC) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत को बढ़ती स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं, विशेष रूप से महामारी के बाद, को पूरा करने के लिए 1.5 मिलियन से अधिक प्रशिक्षित सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों की आवश्यकता है।
 - WHO का अनुमान है कि भारत में प्रत्येक 10,000 लोगों पर केवल एक सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर है, जो अधिक प्रशिक्षित पेशेवरों की आवश्यकता को दर्शाता है।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित प्रयास

- आवंटन (केंद्रीय बजट 2024-25):**
 - स्वास्थ्य के लिए बढ़ा हुआ आवंटन:** स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoH&FW) के लिए ₹1.23 लाख करोड़।
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा,** जिसमें नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की कमी को दूर करने के लिए मौजूदा संस्थानों का उन्नयन शामिल है।
 - पहुँच और दक्षता में सुधार के लिए टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड सहित डिजिटल स्वास्थ्य पहला।**
 - राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM)** के लिए निरंतर समर्थन

• साक्षरता और डिजिटल स्वास्थ्य शिक्षा:

- राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (NDHM) का उद्देश्य स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डिजिटल बनाना और बीमारियों और उपचारों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है।
- आरोग्य सेतु, ई-संजीवनी और माईगव हेल्थ जैसे मोबाइल-आधारित ऐप ने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के प्रसार में सहायता की है।
- ग्रामीण भारत में इंटरनेट की पहुँच बढ़कर 38% हो गई है, जिससे डिजिटल स्वास्थ्य शिक्षा तक पहुँच में सुधार हुआ है।
- जन जागरूकता कार्यक्रम और अभियान जैसे मिशन इंद्रधनुष, राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम (NTCP)।
- राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (NMHP) के अंतर्गत मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता।

अवसर और भविष्य की संभावनाएँ

- **सरकारी पहल और नीति समर्थन:** राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (2017) सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण और अनुसंधान की आवश्यकता पर बल देती है।
 - आयुष्मान भारत और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) ने प्रशिक्षित सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों की माँग सूजित की है।
- **ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा का विकास:** स्वयं जैसे प्लेटफॉर्म और इमू की पहल सस्ती ऑनलाइन सार्वजनिक स्वास्थ्य पाठ्यक्रम प्रदान करती है, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ हो जाती है।
- **अनुसंधान और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का विस्तार:** विश्व स्वास्थ्य संगठन, जॉन्स हॉपकिंस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ और हार्वर्ड टीएच चैन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ जैसे वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों के साथ सहयोग भारत में अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार कर रहा है।
- **उभरते करियर के अवसर:** सार्वजनिक स्वास्थ्य स्नातकों को सरकारी स्वास्थ्य विभागों, गैर सरकारी संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (WHO, UNICEF) और निजी स्वास्थ्य सेवा फर्मों द्वारा तेजी से भर्ती किया जा रहा है।

आगे की राह

- **पाठ्यक्रम का मानकीकरण:** सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा परिषद जैसे केंद्रीय विनियामक निकाय की स्थापना से सभी संस्थानों में एक समान प्रशिक्षण मानक और संकाय योग्यता सुनिश्चित हो सकती है।
- **संस्थाओं का विस्तार:** वंचित क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य विद्यालय स्थापित करने से शिक्षा तक पहुँच में सुधार हो सकता है और क्षेत्रीय असमानताएँ दूर हो सकती हैं।
- **व्यावहारिक प्रशिक्षण का एकीकरण:** सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों में अनिवार्य इंटर्नशिप और फील्डवर्क को शामिल करने से छात्रों के व्यावहारिक कौशल में वृद्धि हो सकती है।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य नौकरियों का सृजन:** राज्य सार्वजनिक स्वास्थ्य संवर्गों की शुरुआत करना और सरकारी स्वास्थ्य प्रणालियों में भर्ती बढ़ाना स्नातकों के लिए समर्पित रोजगार के अवसर प्रदान कर सकता है।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों को नियुक्त करने के लिए निजी अस्पतालों एवं उद्योगों को प्रोत्साहित करने से रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं और क्षेत्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिल सकता है।
- **बढ़ी हुई फंडिंग:** सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा और अनुसंधान के लिए अधिक संसाधन आवंटित करने से क्षेत्र मजबूत हो सकता है और एक कुशल कार्यबल के विकास का समर्थन हो सकता है।

निष्कर्ष

- भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा के सामने आने वाली चुनौतियाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन दुर्गम नहीं हैं।
- मानकीकरण, वित्त पोषण और रोजगार सृजन जैसे मुद्दों को संबोधित करके, देश एक मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यबल का निर्माण कर सकता है जो अपनी स्वास्थ्य सेवा आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो।
- इस लक्ष्य को प्राप्त करने और सभी के लिए एक स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित करने के लिए सरकार, शिक्षा एवं निजी क्षेत्र को शामिल करने वाला एक सहयोगी दृष्टिकोण आवश्यक है।

For more details, please follow the link:

<https://www.nextias.com/ca/editorial-analysis/10-09-2024/public-health-challenges-and-policy-gaps-in-india>

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों की जाँच कीजिए। सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यबल को मजबूत करने और देश में स्वास्थ्य सेवा परिणामों को बेहतर बनाने के लिए इन चुनौतियों का समाधान कैसे किया जा सकता है?

